

## संपादकीय

### कोरोना हारेगा, भारत जीतेगा

देश में कोरोना की दस्तक के साथ जब सरकार ने इससे निपटने की रणनीति पर काम करना शुरू किया तो पीएम मोदी ने अपनी बात जान है तो जहान है, कहकर इस गम्भीर खतरे के प्रति सर्तक किया था। तब तक देश में कोरोना संक्रमित लोगों की संख्या पांच-दस और पचास तक सीमित थी और लोग संचार के माध्यमों से चीन जैसे देशों की खबरों से वाकिफ थे। बात जनता कर्फ्यू से शुरू हुई और लाकडाउन तक पहुंची और संक्रमण का आक्रमण केरल से शुरू होकर देश के 27 राज्यों तक पहुंच गया। जब लोगों में पीड़ित और मृतकों के आंकड़े जानने और दूसरे देशों से उसकी तुलना तक पहुंच गयी तब कोरोना हारेगा भारत जीतेगा जैसे शब्दों को प्रचारित कर धैर्य और हौंसला बढ़ाया जाने लगा। आज स्थिति यह है कि संक्रमितों की संख्या हजारों रोज के हिसाब से बढ़ रही है और मृतकों का आंकड़ा भी हजार को पार करने वाला है तब प्रधानमंत्री मोदी जान भी और जहान भी की बात कर रहे हैं। देश में लाकडाउन को एक माह पूरा हो चुका है और घोषित 40 दिन के लाकडाउन में अभी एक सप्ताह का समय शेष है। सभी लोग अब यह जान समझ चुके हैं कि समस्या सिर्फ बीमारी तक ही सीमित नहीं है। यह एक ऐसी महामारी है जिसका प्रभाव पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था और सामाजिक सुरक्षा से जुड़ा है। लाकडाउन में कब तक रहा जा सकता है? कोरोना का अंत कैसे होगा कब तक होगा? बस सवाल ही सवाल है। जिसका कोई जवाब किसी के पास नहीं है लेकिन एक बात तय है कि भारत जीतेगा। वह इसलिए तय है क्योंकि इस जंग को भारत की जनता लड़ रही है। शासन-प्रशासन के पास जो सीमित साधन हैं उसने उन साधनों को उपलब्ध करा दिया है लेकिन भारत के पास जो अतिरिक्त ताकत है वह जनता की मदद के लिए उठने वाले हाथ है। इस देश के संस्कार हैं कि वह आपातकाल में सभी सीमाएं तोड़ कर हर व्यक्ति एक दूसरे के साथ उसकी मदद के लिए खड़ा होता है। जो अन्य देशों में देखने को नहीं मिलता। यह जंग चाहे जितनी भी लम्बी चले या कितनी भी घातक क्यों न हो फिर भी एक दिन कोरोना हारेगा और भारत जीतेगा यह तय है।

## मनोवैज्ञानिक उपचार में ही है समाधान

अनूप भटनागर  
कोरोना वायरस महामारी से उत्पन्न संकट से निपटने के लिए देश में लॉकडाउन लागू होने के बाद कामकाजी महिलाओं और किशोर-किशोरियों को घर से बाहर यौन उत्पीड़न तथा यौन हिंसा के अपराधों से राहत मिल गयी है। वहीं दूसरी ओर अब घरेलू हिंसा और बच्चों के उत्पीड़न की घटनाओं में इजाफा होने लगा है। आखिर कहीं इनका कारण लॉकडाउन की वजह से उत्पन्न अवसाद तो नहीं है। अगर कोई अवसाद या असामान्य व्यवहार से प्रभावित है तो किसी चिकित्सक या मनोचिकित्सक से सलाह लेना ज्यादा बेहतर होगा।

पिछले करीब तीन सप्ताह से लॉकडाउन की वजह से घरों के भीतर रहने को मजबूर परिवारों के बीच अक्सर छोटी-छोटी बातों पर कहासुनी होती है। कई बार यह गंभीर रूप ले लेती है। इसकी प्रमुख वजह कामकाजी दंपतियों के साथ ही सामान्य परिवारों के सदस्यों का अधिकांश समय घर की चारदीवारी में ही व्यतीत करना है। ऐसी स्थिति में मामूली-सी तकरार कभी-कभी लक्ष्मण रेखा लांघ जाना भी है। घरेलू हिंसा और बच्चों के उत्पीड़न की घटनाओं से निपटने के लिए देश में महिलाओं को घरेलू हिंसा से संरक्षण और किशोर न्याय (देखभाल और संरक्षण) कानून में अनेक प्रावधान हैं। सवाल है कि क्या कोरोना वायरस महामारी के दौर में घरेलू हिंसा और बच्चों के उत्पीड़न की शिकायतों के मामले में इन कानूनों के तहत कार्रवाई उचित होगी शायद नहीं।

यह सही है कि इस समय चाइल्ड हेल्पलाइन और राष्ट्रीय महिला आयोग तथा राज्य महिला आयोगों को मिलने वाली शिकायतों में वृद्धि हुई है। लेकिन मौजूदा

समय में इन शिकायतों पर कानूनी कार्रवाई करने की बजाय परिवार के सदस्यों के साथ बातचीत करके उन्हें परामर्श देकर घर का माहौल सामान्य बनाने का प्रयास सर्वोत्तम उपाय होगा। पुलिस में मामला दर्ज होने के बाद कई बार चीजें बिगड़ जाने की संभावना रहती है।

हां, घरेलू हिंसा या फिर बच्चों के उत्पीड़न के बारे में मिली शिकायतों की छानबीन के बाद अगर पहली नजर में किसी गंभीर अपराध के संकेत मिलते हैं तो निश्चित ही कानून को अपना काम करना होगा। राष्ट्रीय महिला आयोग ने इस तथ्य का संज्ञान लिया है कि लॉकडाउन के दौरान घरेलू हिंसा की घटनाओं में वृद्धि हुई है। आयोग ने हाल ही में कहा था कि 24 मार्च को शुरू हुये लॉकडाउन के पहले पखवाड़े में उसे केवल ई-मेल से घरेलू हिंसा के बारे में 90 शिकायतें मिलीं।

आयोग के अनुसार संभव है कि घरेलू हिंसा के मामलों की संख्या इससे ज्यादा रही हो। हिंसा करने वाले सदस्यों के लगातार घरों में रहने या फिर शिकायत करने की स्थिति में असुरक्षा या प्रताड़ना का सामना करने के भय से महिलाएं आगे नहीं आ रही हैं। आयोग ने घरेलू हिंसा से महिलाओं को बचाने हेतु शिकायत दर्ज कराने की सुविधा उपलब्ध कराने के इरादे से एक व्हाट्सएप नंबर भी जारी किया है। चाइल्ड हेल्पलाइन इंडिया के अनुसार 24 से 31 मार्च के बीच उसे वैसे तो तीन लाख से ज्यादा शिकायतें मिलीं, लेकिन इनमें से 92,105 शिकायतें बच्चों के खिलाफ हिंसा और उत्पीड़न के बारे में थीं। कोरोना वायरस महामारी से जंग के माहौल में घरों में भी अज्ञात किस्म का तनाव व्याप्त है। इसमें ऑफिस द्वारा कामकाजी दंपतियों को घर

से ही काम करने की सुविधा प्रदान करने की भूमिका का भी योगदान हो सकता है।

सरकार द्वारा खींची गयी 'लक्ष्मण रेखा' का पालन करने की बाध्यता के बीच घर के भीतर कैद अनेक परिवारों के सदस्य रोजगार, बच्चों की पढ़ाई, घर के खर्च, आजीविका के साधन, बीमारी की स्थिति में संभावित खर्च जैसी किसी न किसी प्रकार की चिंता की वजह से अवसाद, असुरक्षा और तनाव की आशंकाओं के बीच भविष्य का तानाबाना बुन रहे हैं। ऐसी स्थिति में परिवार के सदस्यों के किसी भी तरह के असामान्य या अनियंत्रित व्यवहार को तूल देने की बजाय इसकी गंभीरता को समझने और असामान्य आचरण कर रहे व्यक्ति की मन:स्थिति को महसूस करने की आवश्यकता है।

कोरोना वायरस महामारी के दंश से देश में बहुत बड़ी संख्या में कामकाजी लोग ही नहीं, बल्कि घरों को संभालने वाली गृहणियों और किशोरवय संतानों के साथ ही बुजुर्गों के अवसादग्रस्त होने, असामान्य व्यवहार करने अथवा मनोविकार का शिकार होने की आशंका बढ़ गयी है। इस तरह के मनोविकार का शिकार होने वाले जनता के जीवन को फिर से पटरी पर लाना सरकार और सामान्य चिकित्सकों के साथ ही मनोचिकित्सकों के लिए बहुत चुनौतीभरा काम है। हां, इस तरह के अवसाद और असामान्य व्यवहार के शिकार व्यक्तियों का जीवन पटरी पर लाने में योग और ध्यान प्रक्रियाएं भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। बेहतर है कि इन घटनाओं को कानूनी प्रक्रिया के दायरे में लाने की बजाय ऐसे मामलों को समझा-बुझाकर हल किया जाये। किसी मनोचिकित्सक की मदद भी ली जा सकती है।

### बराबरी का मेहनताना

एक दिन बहुत बड़े अमीर ने अपने बगीचे में कुछ मजदूर लगाये। फिर दोपहर कुछ और मजदूर अमीर के पास गये और उन्होंने कहा कि हमें भी काम दो। उसने उन्हें भी बगीचे में लगा दिया। फिर दोपहर ढलने लगी, तब कुछ मजदूर आये और उन्होंने कहा कि हमें भी काम दो।

उस अमीर ने उन्हें भी काम पर लगा दिया। फिर सांझ पर सूरज ढलने लगा और दिन अस्त होने लगा, तब भी कुछ मजदूर आये। और उस अमीर ने उन्हें भी काम पर लगा दिया। फिर दिन ढल गया और सबको दिनभर का मेहनताना बांटा गया। उसने सबको बराबर मेहनताना दे दिया। जो सुबह से आये थे, वे नाराजगी में खड़े हो गये।

उन्होंने कहा यह अन्याय है, हम सुबह से मजदूरी कर रहे हैं। कुछ लोग दोपहर के बाद आये और कुछ तो अभी आये ही हैं, जब हम काम ही खत्म कर चुके थे। इन सबको बराबर मजदूरी देना अन्याय है। तो उस अमीर ने कहा तुम्हें जो दिया, वह तुम्हारे काम से कम तो नहीं है उन्होंने कहा नहीं, हमारे काम के लिए तो बहुत है। लेकिन इन्हें जो बहुत पीछे आये हैं उस अमीर ने कहा परमात्मा के राज्य में न कोई आगे है, न कोई पीछे हैं, सब बराबर हैं।

प्रस्तुति : सुभाष बुड़वनवाला

## कोरोना, डंडा और अक्ल

गिरीश पंकज

बाहर कोरोना-दैत्य घूम रहा था, और उससे लड़ने के लिए एक 'अति उत्साही' का मन रह-रहकर मचल रहा था। वह युवक सजधज कर बाहर निकलने वाला ही था, तभी मां ने उसे समझाया, 'नादान, बाहर मत निकलना। कोरोना तुझे अपनी चपेट में ले लेगा या पुलिस का डंडा तुझे सबक सिखा दे।' लेकिन वह निकल ही गया। फिर वही हुआ, जिसका डर था। पुलिसिया डंडे से उसकी पीठ सूज गई और वह कराहते हुए घर लौटा। मां ने कहा, 'नादान, क्या तुझे इतना भी नहीं मालूम कि लॉकडाउन के समय बाहर घूमना प्रतिबंधित है कोरोना से लड़ने का यही एक उपाय है।'

बालक ने कहा, 'मैं कोरोना फोरोना से नहीं डरता। वह मुझे जहां कहीं मिलेगा उसे पटक दूंगा। मां ने समझाते हुए कहा, 'बेटा, वह एक ऐसा भयानक शत्रु है, जो सामने नहीं आता। वायरस है पगले। शरीर में घुस जाता है और धीरे-धीरे मनुष्य को निगलने की कोशिश करता है। दुनियाभर में अनेक लोग मर रहे हैं।'

मां की बात सुनकर बेटे ने ठहाका लगाया और बोला, 'मैं एक बार फिर बाहर निकलूंगा। मैं नहीं डरने वाला। मैंने अनेक फिल्में देखी हैं, जिसमें हीरो दुश्मनों के बीच जाता है और दिशुम-दिशुम करके उनको मार कर ही घर लौटता है। मैंने उन हीरो से बड़ी प्रेरणा ली है।'

मां सिर पीटने लगी और बोली, 'फिल्मी नायकों के कारण न जाने कितने लड़कों की बुद्धि भ्रष्ट हो रही है। हे राम! अब इस नालायक को कैसे समझाऊं।' मां ने टीवी दिखाया और समझाया, 'देख दुनियाभर में कितने लोग कोरोना के कारण मर रहे हैं। अपने देश में भी धीरे-धीरे लोग संक्रमित हो रहे हैं और तू कोरोना से लड़ने की बात कर रहा है इससे लड़ना है तो घर के भीतर रहकर लड़ना है।' बेटे को मां की बात समझ में नहीं आई। उसने कहा, 'घर पर रहकर मैं किससे लड़ूं?' मां ने मुस्कराते हुए कहा, 'तू अपनी अज्ञानता से, अपनी नादानी से लड़। कुछ ढंग की किताबें पढ़। अपना सामान्य ज्ञान बढ़ा। ज्यादा होशियारी करने वाले काल के गाल में समा जाते हैं। चलती ट्रेन के बाहर खड़े होकर सेल्फी लेने वाले मौत के मुंह में चले गए। चट्टान के किनारे खड़े होकर सेल्फी लेने वाले कब नीचे लुढ़क जाते हैं, उन्हें पता नहीं चलता। कोरोना से पंगा न ले, वरना अंततः मुझे रोना पड़ेगा।'

मां की बात सुनकर बालक के ज्ञान के कपाट धीरे-धीरे खुलने लगे। फिर उसने मां से कहा, 'शायद तू ठीक कहती है मां। अभी-अभी व्हाट्सएप में मेरे मित्र के बारे में संदेश मिला है कि उसे कोरोना ने पकड़ लिया है।' मां मुस्कराई और बोली, 'देर आयद, दुरुस्त आयद। जैसी बुद्धि तुझे मिली, वैसी ही बुद्धि दूसरों को भी मिले।'



सुना है... जितेंद्र नेगी